शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक ८ : नई दिल्ली : २६ मई से १ जून २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४२, सर्व ७९, गुजरात की अस्सी दिनों की प्रभावी यात्रा सानंद संपन्न कर २२ मई को राजस्थान की सीमा में प्रवेश कर गए हैं। पूज्यप्रवर १८ जून को जोधपुर पधारेंगे। वहां आपका अष्टान्हिक प्रवास होगा। आचार्यप्रवर १७ जुलाई को चातुर्मास हेतु जैन विश्वभारती, लाडनूं में प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण लाडनूं की ओर

शिक्षा के साथ जीवनमूल्य जुड़ें

१४ मई, वाव। प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रवचन का विषय था--'शिक्षा एवं जीवनमूल्य।' कार्यक्रम में वाव क्षेत्र से संबद्ध साधु-साध्वियों के लिखित भावों को प्रस्तुति दी गई। श्री राजेश मेहता, श्री सुरेश मेहता, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, उपासिका सुरेखाबेन दोशी, श्रीमती संपत मेहता, श्री अपूर्व मोदी, श्रीमती रूपल मेहता एवं श्री दिलीप मेहता ने क्रमशः साध्वी लाभवतीजी, साध्वी चेलनाश्रीजी, साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी योगक्षेमप्रभाजी व मुनि लब्धिकुमारजी, साध्वी शशिरेखाजी, साध्वी निर्भयप्रज्ञाजी, साध्वी कंचनरेखाजी एवं साध्वी प्रभाश्रीजी के लिखित भावोद्गारों को प्रस्तुति दी। विविध त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार करने वाली वाव पथक की बहनों की सूची शिल्पा मेहता ने भेंट की। वाव पथक निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रावक-श्राविकाओं के संपर्क सूत्र की डायरी उपहृत की गई।

इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज एंड एजुकेशन डीम्ड यूनिवर्सिटी (आई.ए.एस.ई.) गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर द्वारा लघु दीक्षान्त समारोह का आयोजन हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एम.एन.भट्ट ने संस्थान की गतिविधियों के बारे में अवगति दी। कुलाधिपति श्री कनकमल दूगड़ ने आज के निर्धारित विषय पर प्रकाश डाला। कुलाधिपति व कुलपति ने एम.बी.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले मुनि योगेशकुमारजी व मुनि अक्षयप्रकाशजी को डिग्री प्रदान की। मानव संसाधन विषय पर एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने वाले मुनिद्वय ने अपनी-अपनी डिग्री गुरुचरणों में समर्पित करते हुए कहा--'विद्यार्थी भाव से मात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमने इस विषय पर जो कुछ अर्जित किया, वह गुरु-कृपा का सुफल है।'

विषय का प्रवर्तन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शिक्षा व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। बौद्धिक विकास का अपना महत्त्व है। मैं बुद्धि को बहुत सम्मान देता हूं और इसे बहुत बड़ा बल मानता हूं। बुद्धि की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। इतना जरूर है कि बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावात्मक विकास भी होना चाहिए। मैं आई.क्यू. एवं ई.क्यू. दोनों को महत्त्वपूर्ण मानता हूं। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत के लिए जीवनविज्ञान का प्रकल्प प्रस्तुत किया। उन्होंने जीवनविज्ञान के माध्यम से मिसिंग पोइंट को स्मृत किया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना की गई। बौद्धिक एवं भावात्मक विकास के साथ शारीरिक व मानसिक विकास को भी जरूरी माना गया। भूगोल, खगोल, गणित आदि लौकिक विद्याओं का महत्त्व है, पर इसके साथ अलौकिक या आध्यात्मिक विद्या भी प्राप्त की जानी चाहिए। इन दोनों विद्याओं का जहां संतुलन होता है, वे संस्थान स्तरीय माने जाते हैं।

मुनिद्वय द्वारा डिग्री प्राप्त करने के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'हमारे दो शिष्य संतों को औपचारिक

डिग्री मिली है। दोनों प्रतिभाशाली युवा संत हैं। मुनि योगेश चिंतनशील है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने इसे मेरी परिचर्या से जोड़ा। वर्षों से यह मेरी परिचर्या में संलग्न है। आगे भी यह इसी तरह सेवा करता रहे। सेवा के साथ इसने अध्ययन किया है, अपने ज्ञान का विकास किया है। यह अपनी संसारपक्षीया मां का इकलौता पुत्र है। यह आगे से आगे विकास करता हुआ धर्मसंघ की सेवा करता रहे। मुनि अक्षयप्रकाश वाव क्षेत्र के ही हैं। अब इनका संसारपक्षीय परिवार अहमदाबादी बन गया है। हरिभाई के संसारपक्षीय पौत्र व भरतभाई के संसारपक्षीय पुत्र हैं। ये भी प्रतिभासंपन्न और चिंतनशील हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी की सेवा में रहे हैं और ज्ञानार्जन किया है। ये भी अपने ज्ञान का विकास करते हुए शासन की खूब सेवा करें। हमारे मुनियों के अध्ययन आदि की व्यवस्था में आई.ए.एस.ई. सरदारशहर का योगदान रहा। मिलापजी, कनकजी आदि का अच्छा सहयोग रहा।'

दूगड़ परिवार की सेवाओं का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सरदारशहर का चैनरूप संपतराम दूगड़ परिवार सुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित परिवार है। सेठ सुमेरमलजी, भंवरलालजी, कन्हैयालालजी की समाज को अच्छी सेवाएं रही हैं। मिलापजी बहुत समझदार व्यक्ति थे, अकस्मात् चले गए। कनकजी, भट्टजी आदि के सहयोग को हम याद करते हैं। जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय जैन विद्या का अध्ययन चला रहा है। आई.ए.एस.ई. भी अपनी सेवाएं देता रहे। पवित्रता, संयम, परोपकार जैसे जीवनमूल्य शिक्षा के साथ जुड़ जाएं तो शिक्षा का अधिक महत्त्व बढ़ जाता है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बलिदानी क्षेत्र वाव का प्रभावी प्रवास

विरोधों एवं अवरोधों के बीच अविचल रहने वाले वाव क्षेत्र के आबालवृद्ध श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति उल्लेखनीय रही है। तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने वाव पदार्पण की उद्घोषणा की। उसके बाद कच्छ की यात्रा की घोषणा के साथ गुर्जर प्रान्त की यात्रा का विस्तार हो गया। वाव को पूर्व घोषित तीन दिनों के प्रवास को भी विस्तार मिला और त्रिदिवसीय प्रवास पंचदिवसीय प्रवास में परिवर्तित हो गया। अक्षय तृतीया जैसे आयोजन के साथ श्रेणी आरोहण के रूप में दीक्षा समारोह भी इसे प्राप्त हो गया। प्रथम दो दिनों का प्रवास गांव के तेरापंथ भवन में और अवशिष्ट तीन दिन का प्रवास मेहता एन. एस.विनय मंदिर में हुआ।

वाव के अधिकांश लोग सूरत, मुम्बई, अहमदाबाद, पालनपुर, नवसारी आदि क्षेत्रों में प्रवासी हैं। आचार्यवर के वाव प्रवास के दौरान लगभग नब्बे प्रतिशत लोगों ने अपने गांव पहुंच कर आराध्य की सेवा-उपासना का लाभ लिया। मेहता, संघवी, दोशी, परीख व मोदी--इन पांच परिवारों में विभक्त लगभग साढ़े तीन सौ परिवार विभिन्न क्षेत्रों में प्रवासी हैं। वाव में सामान्यतः पन्द्रह घर खुले रहते हैं। आचार्यवर के पदार्पण पर वे साढ़े तीन सौ परिवार सत्तर चौकों में खुले। सभी पोलों में अच्छी रौनक बनी रही।

परम श्रद्धेय आचार्यवर वाव के सभी श्रद्धालुओं के घरों में पधारे। घरों में पदार्पण की एक विशेषता यह रही कि आचार्यवर प्रत्येक घर में लगभग एक मिनट से लेकर एक घंटे तक श्रद्धालुओं के घरों में विराजे। गांव के जिस पोल व गली में पूज्यप्रवर पधारे, वे पोल और गलियां गुलजार हो गई, कह सकते हैं कि इतिहास के पन्नों में अंकित हो गईं।

वाव प्रवास में वाव पथक के किशोरों के लिए दोदिवसीय जीवन-निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में मुनि उदितकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी एवं श्री तरीन मेहता ने प्रशिक्षण दिया। शिविर की समाप्ति पर किशोरों को पूज्य आचार्यवर का पावन पाथेय व संबोध प्राप्त हुआ। मंत्री मुनि का भी उत्प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिविर में संपन्न क्विज प्रतियोगिता में मुनि जागृतकुमारजी का योगदान रहा। शिविर की आयोजना में अभिषेक, श्रेयांस मेहता, चिराग संघवी एवं हर्ष परीख का उल्लेखनीय श्रम

रहा। शिविर में इक्यावन किशोरों ने भाग लिया। शिविर की समायोजना में मुनि अभिजितकुमारजी का मार्गदर्शन भी उपयोगी रहा।

प्रवास व्यवस्था समिति, तेयुप अहमदाबाद व राजस्थान हॉस्पिटल अहमदाबाद द्वारा निःशुल्क मेडिकल चेक-अप शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें टी.पी.एफ. के आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय का सहयोग रहा। हॉस्पिटल से संबद्ध डॉक्टरों की टीम ने अपनी सेवाएं दीं। शिविर में लगभग २८२ लोग लाभान्वित हुए। इस उपक्रम के संचालन में कार्यकर्ताओं का निष्ठापूर्ण श्रम रहा।

वाव प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री चंपकभाई मेहता के नेतृत्व में बत्तीस उपसमितियां बनीं, जो अपने-अपने कार्य में संलग्न रहीं। सहसंयोजक श्री प्रवीणभाई मेहता, वाव पथक समाज सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री हंसमुखभाई मेहता, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री रसिकलाल मेहता आदि ने अपने दायित्व का जागरूकता से निर्वाह किया।

अक्षय तृतीया का कार्यक्रम चालीस हजार वर्गफीट में निर्मित ऋषभ समवसरण में आयोजित हुआ। पूरा पण्डाल प्रायः जनाकीर्ण था, जिसमें सात हजार की उपस्थिति आंकी गई। कार्यकर्ताओं ने बताया--बाहर से आने वाले लोगों की भोजन व्यवस्था हेतु बीस हजार वर्गफीट में कूलरयुक्त पंडाल एवं गर्मी में लोगों की सुविधा हेतु सात हजार वर्गफीट का वातानुकूलित डोम बनाया गया। पारणा करने वाले तपस्वियों व अन्य यात्रियों के लिए अस्सी प्लाई कुटीर निर्मित हुए। सौ अटैच्ड रशियन कॉटेज बनाए गए, जिसमें पचास कॉटेज तपस्वियों को निःशुल्क प्रदान किए गए। यात्रियों के लिए लगभग बारह किमी. की परिधि क्षेत्र में आवास की माकूल व्यवस्था रही। आयोजन में संभागी बनने हेतु लगभग सात हजार यात्री वाव आए। अक्षय तृतीया के दिन ६५०० लोगों ने भोजन व्यवस्था का उपयोग किया। वाव के प्रवासी युवाओं ने अथक श्रम कर पूज्यप्रवर के प्रवास को सफल और यादगार बनाया। वाव के निवासियों और प्रवास व्यवस्था से जुड़े लोगों को पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। बलिदानी क्षेत्र वाव ने व्यवस्था को नया रूप देकर एक मानक स्थापित किया, जिससे लंबे समय तक पूज्यवर का यह प्रभावी प्रवास लोगों की स्मृतियों में बना रहेगा।

सफलता का मंत्र सत्पुरुषार्थ

१५ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर वाव का पंचदिवसीय प्रवास संपन्न कर थराद की ओर प्रस्थित हुए। विहार के मध्य वाव के पूर्व सरपंच मास्टर कानजीभाई की प्रार्थना पर आचार्यवर उनके आवास पर पधारे। थराद के एकमात्र तेरापंथी परिवार के घर का स्पर्श करने के लिए पूज्यवर मार्ग से लगभग १.०५ किमी. भीतर पधारे। स्व.अमोलकचन्दभाई परीख का यह परिवार आचार्यवर के पावन पदार्पण से कृतकृत्य हो गया। पूज्यप्रवर वहां कुछ क्षण असीन भी हुए। उसके पश्चात लगभग १३.०४ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर गायत्री विद्यालय, थराद पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'चार तत्त्व दुर्लभ बताए गए हैं, उनमें से एक है--संयम में पराक्रम। हमारी दुनिया में शक्ति का बहुत महत्त्व है। शक्तिहीन व्यक्ति की स्थिति दयनीय होती है। व्यक्ति को अपनी शक्ति की पहचान करनी चाहिए, उसका विकास करना चाहिए और प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए। पुरुषार्थ एक ऐसी शक्ति है, जिसका मूल्यांकन होना चाहिए। जीवन में भाग्य का अपना स्थान है, किन्तु कुछ करने के लिए, बनने के लिए पुरुषार्थ अपेक्षित है। पुरुषार्थ का सिद्धान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है। नियति, भाग्य आदि जानने-समझने योग्य हैं, किन्तु भाग्य के भरोसे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। जो भाग्य के भरोसे बैठ जाता है, उसे मैं अभागा कहना चाहूंगा। मेरा तो इस संदर्भ में यह भी सोचना है कि देववाद में भी ज्यादा नहीं जाना चाहिए। जो काम हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए देवों को कष्ट क्यों दिया जाए? पुरुषार्थ करणीय होता है, किन्तु वह भी दुर्भाग्यशाली है जो गलत कार्यों में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करता है। व्यक्ति को विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए।

यह सफलता का एक मंत्र है।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'हमारा पुरुषार्थ किसी को कष्ट देने के लिए नहीं, अपना और दूसरों का कल्याण करने के लिए होना चाहिए। केवल अपने लिए कुछ करना सामान्य बात होती है, दूसरों के कल्याण के लिए कुछ करना विशेष बात होती है। पुरुषार्थहीनता अभिशाप है। वे व्यक्ति दुनिया के तुच्छ प्राणी हैं, जिनमें पराक्रम की भावना नहीं होती। आलस्य के वशीभूत सक्षम व्यक्ति भी सत्पुरुषार्थ न करे तो वह माहात्म्य को कैसे प्राप्त कर सकेगा? व्यक्ति को अपनी शक्ति का सदुपयोग करते हुए विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए।' कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

श्रेष्ठ है जीने की कला

१६ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर थराद से प्रातः १३.०६ किमी. का विहार कर भोरडू पधारे। यहां आपका प्रवास श्री भगतसिंह विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारा जीवन शरीर और आत्मा का योग है। केवल शरीर और केवल आत्मा जीवन नहीं, दोनों के संयोग का नाम जीवन है। शरीर और आत्मा का यह संबंध स्थायी नहीं होता। सभी कलाओं में जीने की कला श्रेष्ठ है। व्यक्ति को उसे सीखना चाहिए। श्वास आता है और जाता है, यह जीवित होने का लक्षण है, किन्तु यह सामान्य बात है। शरीर अस्थायी है और आत्मा स्थायी है। शरीर के लिए खाना, पीना, सोना आदि कितने कार्य किए जाते हैं तो यह भी ध्यातव्य है कि स्थायी आत्मा के लिए क्या किया जा रहा है? अस्थायी की भी अपेक्षा है, किन्तु स्थायी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। व्यक्ति जीने की कला सीख ले तो जीवन कलापूर्ण बन सकता है और वह शरीर और आत्मा दोनों के लिए लाभप्रद बन सकता है।' पूज्य आचार्यवर ने अपने प्रवचन में जीने की कला के चार सूत्रों--ईमानदारी, मैत्री, संयम और सत्पुरुषार्थ की व्याख्या करते हुए उन्हें आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

पारिवारिक शान्ति के घटक तत्त्व

१७ मई। आज १०.०७ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर राह गांव में पधारे। यहां आपका प्रवास पगार केन्द्र शाला में रहा। मार्ग से लगभग तीन किमी. भीतर स्थित भलासरा गांव के एकमात्र तेरापंथी श्रावक पृथ्वीराज बागरेचा की प्रार्थना पर आचार्यवर ने मुनि राजकुमारजी को कुछ समय के लिए वहां भेजा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति सामूहिक जीवन जीता है। बहुत से लोगों के लिए एकाकी जीवन जीना कुछ कठिन होता है। परिवार और समाज व्यक्तियों के समूह से बनते हैं। पारिवारिक जीवन शान्तिमय रहे, इसके लिए तीन तत्त्व अपेक्षित होते हैं--संप, सन्मति और संपत्ति। परिवार में संप-सौहार्द रहे तो शान्ति रह सकती है, लेकिन इसमें कुछ बाधाएं हैं। जिस परिवार में स्वार्थ हावी हो जाता है, वहां संप रहना कठिन हो जाता है। अपने हित के लिए दूसरों का अहित करने वाले सदस्यों के परिवार में पारस्परिक सौहार्द कैसे रह पाएगा? इसलिए पारिवारिक सौहार्द के लिए स्वार्थ का परित्याग अपेक्षित होता है। संप के लिए सामंजस्य बिठाना भी आवश्यक है। बढ़ई जिस प्रकार काट-छांट कर दरवाजों में सामंजस्य बिठा देता है, उसी प्रकार पारिवारिक जीवन में भी पारस्परिक समरसता बहुत आवश्यक होती है। सामने वाले की रुचि का सम्मान हो तो सामंजस्य का एक आयाम आ सकता है। सहिष्णुता भी पारस्परिक सौहार्द के लिए आवश्यक तत्त्व है। कभी छोटे बड़ों को तो कभी बड़े छोटों को सहन करें, यह वांछनीय है। बड़ों के द्वारा छोटों को केवल डांट ही नहीं, स्नेह और वात्सल्य मिलना भी अपेक्षित होता है। दिन भर डांटते रहने से डांट में निष्प्राणता आ सकती है, उसका महत्त्व कम हो सकता है।

पारिवारिक शान्ति का दूसरा आयाम है--सन्मति। पारिवारिक सदस्यों में चिन्तन की स्वस्थता होनी चाहिए। उदारतापूर्ण चिंतन, नशामुक्ति, संयमप्रधान जीवनशैली और सकारात्मक चिंतन रहे तो पारिवारिक शान्ति रह सकती है। जिस परिवार में बुराइयों का बाहुल्य है, वह परिवार शान्तिपूर्ण कैसे रह सकता है?

आचार्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त लाडनूं तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत के माध्यम से पूज्यवर के पावन पदार्पण के लिए प्रतीक्षातुर तेरापंथ की राजधानी लाडनूं के लोगों की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी।

मंत्र को मित्र बनाएं

१८ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः राह से १४.०४ किमी. का विहार कर यावरपुरा पधारे। यहां आपका प्रवास प्राथमिक एवं उच्चतर प्राथमिक शाला में रहा। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म साधना के अनेक प्रयोग हैं। उनमें एक सुन्दर प्रयोग है--जप की साधना। दुनिया में दूसरों को मित्र बनाया जाता है। यदि मंत्र को मित्र बना लिया जाए तो वह हमेशा साथ रह सकता है। विभिन्न धर्मों में विभिन्न मंत्र निर्दिष्ट हैं। जैन धर्म में 'नमस्कार महामंत्र का जो महत्त्वपूर्ण स्थान है, वह अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। यह एक प्रकार से असाम्प्रदायिक मंत्र है। वीतरागता इसकी आत्मा है। इसमें पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है। अर्हत् और सिद्ध वीतराग होते हैं। आचार्य वीतराग अथवा वीतरागता की साधना करने वालों का नेतृत्व करने वाले होते हैं। उपाध्याय वीतराग वाणी के अध्येता होते हैं। साधु वीतराग अथवा वीतरागता की साधना में संलग्न होते हैं। वीतरागता के प्रति भक्ति भावना और साथ में वीतरागता की साधना हो तो कर्मों के भार से मुक्त बना जा सकता है। इस प्रकार नमस्कार महामंत्र का जप बहुत पुनीत प्रयोग है। ऐसे मंत्र को अपना मित्र बनाकर जप किया जाए और वीतरागता की साधना की जाए तो हमारी आत्मा श्रेय की ओर गति कर सकती है।'

पूज्यप्रवर ने तीन प्रकार की कामनाओं का उल्लेख करते हुए कहा--'कामना के तीन प्रकार हैं--अधम, मध्यम और उत्तम। अधम कामना में व्यक्ति दूसरों के अनिष्ट की आकांक्षा करता है। द्वेषवश और ईर्ष्यावश किसी के अनिष्ट की वांछा करना निकृष्ट कोटि की कामना है। मध्यम कोटि की कामना वाला व्यक्ति दूसरों के अनिष्ट की इच्छा तो नहीं करता, किन्तु अपने लिए भौतिक आकांक्षा करता है। लोक व्यवहार में इसे बुरा भी नहीं माना जाता। उत्तम कामना में व्यक्ति अपने आध्यात्मिक विकास की कामना करता है। व्यक्ति को अधम कामना तो करनी ही नहीं चाहिए। जो दूसरों का अनिष्ट सोचता है अथवा करता है, वह अपना अनिष्ट कर लेता है। जो दूसरों का हित सोचता है, हित करता है, वह अपना भी हित साध लेता है।'

श्रीडूंगरगढ़ निवासी सूरत प्रवासी श्री लाभूरामजी बोथरा की धर्मपत्नी श्रीमती मालीदेवी बोथरा के स्वर्गवास के पश्चात पारिवारिकजन संबल प्राप्त करने हेतु पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में श्रीमती झणकारदेवी बोथरा ने इस संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण जन्मदिवस समारोह

१९ मई, बैशाख शुक्ला नवमी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का ५२वां जन्मदिवस। प्रातः चार बजे से पूर्व अहमदाबाद, धानेरा एवं अन्य कई क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल पर पहुंच गए। लगभग चार बजे आचार्यप्रवर विराजमान हो गए। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने जयध्वनि की। आचार्यवर अन्दर कक्ष में पधार गए। लगभग सवा चार बजे बाहर पधारे। लोगों ने अपनी श्रद्धा से ओतप्रोत भावनाएं श्रीचरणों में समर्पित कीं। मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी ने भक्ति भरे गीत प्रस्तुत किए। श्रीमती लीला सालेचा एवं उषा जैन ने भी गीत का संगान किया।

आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा--वैशाख माह के साथ मेरे जीवन के कई प्रसंग जुड़े हुए हैं। मेरा जन्म और मेरी दीक्षा इसी माह में हुई। आचार्य तुलसी ने मुझे अग्रणी इसी माह में बनाया। इसी महीने में मुझे संघ ने दायित्व की चादर ओढ़ाई। मैं आज प्रातः चार बजे उठा। लोगों को तो मना कर दिया, पर संतों को मना करना मुश्किल होता है, क्योंकि वे मेरे आसपास होते हैं। संतों ने मुझे घेर लिया और मेरे प्रति मंगलकामना की और आप सबने भी शुभकामना की। हमारे सामने यह मुख्य लक्ष्य है कि हम अपने जीवन का कल्याण करें और परम लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में गतिशील बनें।'

प्रातः सूर्योदय के साथ यावरपुरा से लगभग तेरह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर धानेरा पधारे। वैसे आज का विहार दस किमी. का था, किन्तु गांव में जुलूस रूप में पदार्पण से यह दूरी तीन किमी. अधिक हो गई। धानेरा में पूज्यप्रवर का प्रवास डी.बी.पारेख हाईस्कूल में हुआ। धानेरा स्कूल में पधारते ही महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी वंदनार्थ पधारी। उस समय साध्वियों ने गीत का संगान किया।

जन्मदिवस कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यवर के महामंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल व मूर्तिपूजक समाज पाठशाला की बालिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुनि विजयकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, बालमुनि ध्रुवकुमारजी, साध्वी भावितयशाजी व साध्वीवृन्द ने गीत का संगान किया। मुनि मृदुकुमारजी, मुनि विवेककुमारजी, मुनि सिद्धकुमारजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, साध्वी हिमांशुप्रभाजी, साध्वी ख्यातयशाजी, साध्वी प्रशान्तयशाजी ने कविता प्रस्तुत की। आचार्यवर की संसारपक्षीया भतीजी साध्वी सुमतिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में आचार्यवर के दीर्घायु होने की कामना की। स्थानीय तेरापंथ समाज की ओर से श्री शान्तिलाल लोढ़ा ने स्वागत किया। समणी निर्मलप्रज्ञाजी, अहमदाबाद सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्र चोपड़ा, गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के श्री जवेरीलाल संकलेचा, तेयुप अहमदाबाद के श्री मुकेश गुगलिया, उधना तेयुप की ओर से श्री महावीर संचेती, श्रीमती लीला सालेचा (मुम्बई), श्री प्रवीणभाई मेहता, श्री अशोकभाई संघवी (वाव) एवं श्रीमती रुचि लोढ़ा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। महासभा की गुजरात इकाई के प्रभारी श्री विनोद बांठिया ने महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू का शुभकामना पत्र भेंट किया। नन्हीं बालिका महक ने अपने बालसुलभ भाव व्यक्त किए। साध्वियों ने रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जन्म लेना एक नियति है। जिसका जन्म होता है, उसमें इस जन्म का पुरुषार्थ नहीं होता। जन्म लेना कोई बड़ी बात नहीं, संसार की एक सामान्य घटना है। जीवन कैसे जीया जाता है, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जीने का समय कितना मिला, कितना मिलेगा और वह जीवन कैसा होगा, ये प्रश्न कई बार मानस में उभरते हैं। कई दीर्घजीवी होते हैं तो कई अल्पजीवी होते हैं। हमारे धर्मसंघ में सौ पार करने वाले कम ही मिलेंगे। हमारे आचार्यों और साधु-साध्वियों ने अभी तक सौ वर्ष पार नहीं किया है। श्रावक समाज में भी सौ वर्ष का आयुष्य पाने वाले नगण्य हुए हैं। दीर्घ जीवन की प्राप्ति महत्त्वपूर्ण है, पर उससे भी महत्त्वपूर्ण है पवित्र जीवन। अल्प जीवन भी महत्त्वपूर्ण बन सकता है, बशर्ते कि जीवन पवित्र हो। जन्मदिन मनाने की मेरी अभिरुचि अभी बनी नहीं है। जन्म सभी लेते हैं। इसमें मेरा माहात्म्य कहां है? इक्यावन वर्ष पूर्व इस दुनिया में बाहर आकर मैंने श्वास लेना शुरू किया।'

जन्म के बाद की स्थितियों का चित्रण करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'जिस परिवार में मेरा जन्म हुआ, वह कोई बहुत धनाढ्य परिवार नहीं था। एक सामान्य व अच्छा परिवार रहा। उस समय मेरे संसारपक्षीय दादा, पिता, माता व अन्य सदस्य विद्यमान थे। थोड़ा बड़ा हुआ तो राजेन्द्र विद्यालय में प्रवेश हुआ और वहां मैंने कई वर्ष पढ़ाई की। अपनी कक्षा का मॉनिटर भी बना। साधु-साध्वियों का संपर्क मिला तो उनके पास भी जाने लग गया। मेरी धार्मिक अभिरुचि बढ़ने लगी। पिता का साया मुझे लंबे काल तक नहीं मिला। मैं जब लगभग सात वर्ष का था, तब पिताजी बीमार हो गए। इलाज के लिए उन्हें रतनगढ़ ले जाया गया। मैं भी परिवार के अन्य सदस्यों के साथ वहां गया। कई दिन बाद पुनः सरदारशहर आ गए

और कुछ दिनों बाद उनका निधन हो गया। मुझे वह घटनाक्रम याद है। मुझे संसारपक्षीया मां से प्रेरणा प्राप्त होती रही। मुझे स्मरण है मेरे संसारपक्षीय पिता झूमरमलजी माला फेरते, कुछ क्षण सूर्य के सम्मुख खड़े होते और लौट आते। साधुओं के ठिकाने में वे कम ही जाते। वर्ष में कोई दो-तीन बार ही उनका जाना होता। वैसे हमारे संसारपक्षीय परिवार में पुरुष कम ही जाते, बहनें जाया करती थीं।

परम उपकारी गुरुद्वय का श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मुझे गुरुदेव तुलसी की सन्निधि मिली। कुछ वर्ष बाद युवाचार्य और फिर आचार्य महाप्रज्ञ का नैकट्य प्राप्त हो गया। दो-दो धर्माचार्यों का मुझे साया मिला। आचार्य तुलसी के अनुशासन व आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशन में रहने का मौका मिला। महान गुरु की सन्निधि मिलना विशेष बात होती है। उनसे मुझे कुछ सीखने का अवसर मिला। गुरुदेव तुलसी में कितनी तेजस्विता थी। उनका ज्ञान व उनकी चिंतनशीलता गहन थी। उनका पराक्रम विशिष्ट था। उनकी अनुशासनशैली विशिष्ट थी। इतने बड़े संघ को लगभग छह दशक तक उन्होंने अपना नेतृत्व दिया। गुरुदेव महाप्रज्ञ में कितनी करुणा व कोमलता थी। वे श्रुत की आराधना करते। ऐसे श्रुतोपासक गुरु की चरण-शरण में रहने का मौका मिला। मंत्री मुनिश्री जैसे महान संतों के पास रहने का मौका मिला। जीवन में आरोह और अवरोह आते रहते हैं। मैंने भी इन दोनों स्थितियों को देखा है। इन सारी स्थितियों में संतुलन और सहनशक्ति बनी रहनी चाहिए। अपनी शक्ति का दुरुपयोग करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मैं अपने जीवन का अवलोकन करूं तो लगता है संतों का मुझे कितना अनुग्रह और वात्सल्य मिला है। मुनिश्री डूंगरमलजी स्वामी, मुनिश्री गणेशमलजी स्वामी (गंगाशहर), मुनिश्री सोहनलालजी स्वामी (श्रीडूंगरगढ़) जैसे पुराने संतों का वात्सल्य मिला। मुनि सोहनलालजी स्वामी (चाड़वास) के पास तो मुझे रहने का मौका मिला। वे कितने निर्मल, स्वाध्यायी व कलाकार संत थे। कला तो एक बात है, पर उन्होंने श्रुत की उपासना की। उनकी मेरे पर कितनी कृपा और वत्सलता रही। मुनिश्री रोशनलालजी स्वामी को भी याद करता हूं। वे मंत्री मुनिश्री के पास में रहे और बाद में अगवानी बने। उनके पास भी मुझे रहने का मौका मिला। शासन गौरव मुनिश्री मधुकरजी स्वामी, मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी के साथ भी रहने का मौका मिला।' जन्मदिवस पर प्राप्त पत्रों, संवादों आदि के माध्यम से शुभकामना व मंगलभावना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मेरे प्रति जो प्रमोदभाव व्यक्त किए गए हैं, मंगलभावनाएं मिली हैं, उन्हें मैं स्वीकार करता हूं।'

धानेरा आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'लगभग साठ वर्ष पूर्व आचार्य तुलसी यहां पधारे थे। साठ वर्ष बाद हम हमारी पीढ़ी में आए हैं और पहली बार आए हैं। सबमें धर्म भावना विकसित होती रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

२० मई को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का पट्टोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। २१ मई को पूज्यप्रवर भाटीज, २२ मई को रतनपुर व २३ मई को रानीवाड़ा पधारे। कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

स्मृति-संबल

- राजाजी का करेड़ा निवासी उदयपुर प्रवासी डा.कौशल जैन (सुपुत्र-श्री लादूलाल मेड़तवाल) का अट्ठाईस वर्ष की अवस्था में एक असाध्य बीमारी में देहावसान हो गया। वह श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.रोशनलाल मेड़तवाल का सुपौत्र था। डा.कौशल शान्त स्वभावी, सरल व धर्मनिष्ठ युवा था। वह संगीतज्ञ और कलाकार भी था।
- गांगशहर निवासी श्रीमती मनोहरीदेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी-श्री भंवरलालजी चोपड़ा) का देहावसान हो गया। उनके वर्षों से जमीकन्द व रात्रि भोजन का परित्याग था। श्रावण-भाद्रव में एकान्तर तप किया करती थी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करना उनका नियम था। पूरे चोपड़ा परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

- लाम्बोड़ी निवासी मुम्बई प्रवासी श्रीमती कमलादेवी बाफना (धर्मपत्नी-श्री चन्दनमलजी बाफना) का निधन हो गया। वह स्वभाव से सरल व धार्मिक प्रकृति की श्राविका थी। सामायिक आदि धार्मिक क्रियाओं में जागरूक थीं।
- गंगाशहर निवासी श्री भंवरलाल चोपड़ा (सुपुत्र-स्व.चतुर्भुजजी चोपड़ा) का देहावसान हो गया। उन्होंने अपने जीवन में चौदह मासखमण व बाईस तक की लड़ी संपन्न की तथा सत्ताईस से इकतालीस तक की लड़ी में मात्र तैंतीस व चौंतीस अवशिष्ट रहे। सबसे लंबी छियालीस की तपस्या कर वे एक तपस्वी के रूप में सामने आए। उन्हें रात्रि भोजन का परित्याग था। वे प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करते थे। उनके निधन से मात्र एक सप्ताह पूर्व उनकी धर्मपत्नी मनोहरीदेवी का देहान्त हुआ। उनके सुपुत्र धनराजजी व चारों पुत्रियों में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। समणी गौरवप्रज्ञाजी उनकी भतीजी हैं।
- पेटलावद निवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री बागमल नाथाजी का चौरासी वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे प्रतिदिन सामायिक, ध्यान, जप करने वाले श्रद्धाशील श्रावक थे। स्थानीय सभा के पदाधिकारी के रूप में उन्होंने लंबे समय तक अपनी सेवाएं दीं। साधु-साध्वियों की सेवा में बहुत सजग थे। उनका पूरा परिवार संस्कारी और धर्मसंघ की सेवा में संलग्न है।
- आसोतरा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री नेमीचन्द चोपड़ा का संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। वे पिछले तीस वर्षों से व्यापार से प्रायः मुक्त और निर्मोही जीवन जीने के अभ्यास में संलग्न थे। उन्होंने अपने जीवन में प्रायः एलोपैथिक दवा का सेवन नहीं किया। अन्तिम डेढ़ माह तक अस्वस्थ रहे। जब उन्हें लगा कि अब स्वस्थ होना मुश्किल है तो उन्होंने खाना-पीना व दवा लेना छोड़ दिया। चार दिन बाद पूज्य आचार्यवर की अनुज्ञा व समणी शीलप्रज्ञाजी के सहयोग से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। भयंकर वेदना में भी इनकी सहिष्णुता प्रशस्य रही।
- पचपदरा निवासी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती सुन्दरदेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी-स्व.अमृतलालजी चोपड़ा) का मुम्बई में देहावसान हो गया। सामायिक, जप आदि उनका नियमित क्रम था। उनकी इच्छा के अनुरूप पारिवारिकजनों ने किसी भी प्रकार की रूढ़ि को प्रश्रय नहीं दिया। उनके पति श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.अमृतलालजी चोपड़ा ने वर्षों तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अपनी सेवाएं दीं। उनके एक पुत्र महेन्द्रजी अहमदाबाद सभा के अध्यक्ष हैं और उनके दामाद सोहनजी ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में वर्षीतप का पारणा करने वालों की सूची

१. श्री केविन प्रकाशभाई मेहता	वाव-मुम्बई	११.श्रीमती मंजुबेन लादूलाल नंगावत	उधना
२. श्रीमती कांताबेन दिनेशभाई मेहता	वाव-मुम्बई	१२.श्रीमती कमलाबेन कंवरलाल नोलखा	उधना
३. श्री महेशभाई एम.नानावटी	सूरत	१३.श्रीमती किरण रमेश चोपड़ा	सूरत
४. श्रीमती हंसाबेन चंपकलाल मेहता	वाव-सूरत	१४.श्रीमती कमलाबेन वरदीचंद शाह	बायड़
५. श्रीमती वर्षाबेन प्रकाशभाई परीख	वाव-सूरत	१५.श्रीमती प्रेमदेवी लादूलाल बोरदिया	डीसा
६. श्रीमती अमिताबेन अशोकभाई परीख	वाव-सूरत	१६.श्रीमती नयनाबेन भगवतीलाल शाह	बड़ोदरा
७. श्रीमती कल्पनाबेन हेमंतभाई शाह	वाव-सूरत	१७.श्रीमती मंजु बालकृष्ण श्रीमाल	बड़ोदरा
८. श्रीमती कोकिलाबेन हंसमुखभाई संघवी	वाव-सूरत	१८.श्रीमती लक्ष्मीबेन फतेहलाल पोरवाल	राजकोट
९. श्रीमती वीराबेन नवीनभाई मेहता	वाव-सूरत	१९.श्रीमती ताराबेन राजमल बोल्या	बायड़
१०.श्रीमती प्रमिलाबेन महेन्द्रभाई मेहता	वाव-सूरत	२०.श्रीमती मंजुदेवी मदनलाल डांगी	अहमदाबाद

२१.श्रीमती सविताबेन कांतिलाल संघवी वाव-सूरत
२२.श्रीमती प्रभाबेन मुक्तिलाल मेहता वाव-सूरत
२३.सुश्री रिद्धि हेमंतभाई शाह वाव-सूरत
२४.श्रीमती प्रमिलाबेन बाघजीभाई परीख मावसरी
२५.सुश्री आकृति भरतकुमार मोदी वाव
२६.श्रीमती गुणीबेन हरीलाल परीख वाव
२७.श्रीमती स्नेहलता संजय जैन सूरत
२८.श्रीमती बेबीबेन राजमल मेहता सूरत
२९.श्रीमती सुशीलाबेन मांगीलाल भंसाली सूरत
३०.श्रीमती लाजवंतीबेन सोहनलाल गोलेच्छा सूरत
३१.श्रीमती मोहिनीदेवी माणकचंद गोलेच्छा सूरत
३२.श्रीमती गीतादेवी जयंतीलाल राठौड सूरत
३३.श्रीमती सुशीला नरेन्द्रकुमार काबड़िया सूरत
३४.श्रीमती ललिता प्रकाश जीरावला सूरत
३५.श्रीमती कमला रोशनलाल इन्द्रावत सूरत
३६.श्रीमती लीलादेवी ईश्वरलाल जैन सूरत
३७.श्रीमती मीठूबेन मीठालाल बंब सूरत
३८.श्री सोहनराजजी बुरड़ सूरत
३९.श्रीमती सरोजदेवी राजेश जैन सूरत
४०.श्रीमती पिस्तांदेवी ओमप्रकाश मदानी सूरत
४१.श्रीमती तुलसीदेवी ओमप्रकाश मेहता सूरत
४२.श्रीमती दरियादेवी मोहनलाल पालगोता सूरत
४३.श्रीमती गुलाबदेवी बोथरा सूरत
४४.श्रीमती उमरावदेवी गेंदमल कोठारी सूरत
४५.श्रीमती सज्जनदेवी सोभागमल जैन उधना
४६.श्रीमती कमलादेवी लक्ष्मीलाल गोखरू उधना
४७.श्रीमती सुमनदेवी राजेशकुमार बैद अहमदाबाद
४८.श्रीमती मंजुदेवी मदनलाल डांगी अहमदाबाद
४९.श्रीमती जसोदादेवी भंवरलाल बागरेचा अहमदाबाद
५०.श्रीमती कान्तादेवी उत्तमचन्द डागा अहमदाबाद
५१.श्रीमती पुष्पाबेन हस्तीमल भरसारिया अहमदाबाद
५२.श्रीमती भंवरीदेवी रायचन्द बैंगानी अहमदाबाद
५३.श्रीमती रूपमदेवी जसराज बुरड़ अहमदाबाद
५४.श्रीमती इन्द्रादेवी पारसमल सालेचा अहमदाबाद
५५.श्रीमती शांताबेन शांतिलाल पोखरना अहमदाबाद
५६.श्री शांतिलाल कजोड़ीमल पोखरना अहमदाबाद
५७.श्रीमती पिस्तांदेवी धनराज छाजेड़ अहमदाबाद
५८.श्रीमती चन्द्रप्रभादेवी चंपालाल भंसाली गांधीधाम
५९.श्रीमती विजयलक्ष्मी अनंतकुमार भंसाली गांधीधाम
६०.श्रीमती कंचनबेन लक्ष्मीलाल नागोरी उंझा
६१.श्री पारसमल हरकचंद बाफना बारडोली
६२.श्रीमती विमलादेवी बालचंद शाह धानेरा
६३.श्रीमती मधुबेन प्रकाशचंद सुनानिया धानेरा
६४.श्री मनोहरलाल कन्हैयालाल धूप्या गंगाधरा
६५.श्रीमती कंचनबेन मोतीलाल बणुत पालनपुर
६६.श्रीमती कंचनबेन हीरालाल जैन हिम्मतनगर
६७.श्रीमती निर्मलादेवी गोकुलप्रसाद जैन पानेरा
६८.श्रीमती मधुबाला राजकुमार बरबेटा रतलाम
६९.श्रीमती तारादेवी समीरमल कोठारी रतलाम
७०.श्रीमती लीलादेवी अशोकजी कांठेड़ आसीन्द
७१.श्रीमती जतनदेवी रूडमल काबड़िया आसीन्द
७२.श्रीमती कंचनदेवी महावीर कांठेड़ आसीन्द
७३.श्रीमती लाडदेवी रोशनलाल कांठेड़ आसीन्द
७४.श्रीमती कंचनदेवी रतनलाल रांका आसीन्द
७५.श्रीमती रूपादेवी अर्जुनलाल बुरड़ आसीन्द
७६.श्रीमती भंवरदेवी मदनलाल लोढ़ा आसीन्द
७७.श्रीमती भंवरीदेवी चंपालाल संकलेचा जसोल
७८.श्रीमती सायरदेवीकिशोरकुमार कोठारी जसोल
७९.श्री डूंगरमल बालकचंद भंसाली जसोल
८०.श्रीमती सुंदरदेवी डूंगरमल भंसाली जसोल
८१.श्रीमती सुशीलादेवी कालूराम संकलेचा जसोल
८२.श्रीमती मंजुबाई मोहनलाल शाह पीपाड़
८३.श्रीमती लक्ष्मीदेवी जसकरण बैंगानी बीदासर
८४.श्री कपूरचंद छगनमलजी बेताला छोटीखाटू
८५.श्रीमती प्रेमलता कपूरचंद बेताला छोटीखाटू
८६.श्रीमती सरस्वतीदेवी मूलचंद नाहटा बालोतरा
८७.श्रीमती अमावीदेवी भीकचंद सालेचा बालोतरा
८८.श्रीमती रेशमीदेवी भेरूंलाल श्रीश्रीमाल बालोतरा
८९.श्रीमती आंचीदेवी मीठालाल ओस्तवाल बालोतरा
९०.श्रीमती देवी नथमल बाफना बालोतरा
९१.श्रीमती वरजूदेवी भगवानमल छाजेड़ बालोतरा
९२.श्रीमती निर्मलादेवी डूंगरचंद संकलेचा बालोतरा
९३.श्री घेवरचन्द गांधी मेहता बालोतरा
९४.श्रीमती भंवरीदेवी घेवरचंद मेहता बालोतरा
९५.श्रीमती पुष्पादेवी भेरूंलाल डागा बालोतरा
९६.श्रीमती ज्योतिबाई हरकचंद श्रीश्रीमाल बालोतरा
९७.श्रीमती शांतिदेवी सोहनराज चोपड़ा पचपदरा
९८.श्रीमती गीतादेवी कांतिलाल छाजेड़ पचपदरा

९९.श्रीमती ज्ञानलता कमलकिशोर संकलेचा गांधीधाम
१००.श्रीमती सोहनीदेवी केवलचन्द चौपड़ा गांधीधाम
१०१.सुश्री अलका रणजीतसिंह जाडेजा गांधीधाम
१०२.श्रीमती अमावीदेवी अरविंदकुमार भंडारी बालोतरा
१०३.श्रीमती शकुंतलादेवी गौतमचंद भंडारी बालोतरा
१०४.श्रीमती पेमीदेवी सोहनराज भंडारी बालोतरा
१०५.श्रीमती बदामीदेवी बाबूलाल चोपड़ा बालोतरा
१०६.श्रीमती लीलादेवी हीरालाल तलेसरा बालोतरा
१०७.श्रीमती पानीदेवी केसरीमल जीरावला बालोतरा
१०८.श्रीमती रोहिणीदेवी लूणचन्द छाजेड़ बालोतरा
१०९.श्रीमती धरमीदेवी पुखराज तलेसरा बालोतरा
११०.श्रीमती कान्तादेवी गौतमचन्द तलेसरा बालोतरा
१११.श्रीमती लीलादेवी हीरालाल छाजेड़ बालोतरा
११२.श्रीमती अणसीदेवी माणकचंद भंसाली बालोतरा
११३.श्रीमती पुष्पादेवी भंवरलाल गोगड़ बालोतरा
११४.श्रीमती नेनीदेवी चंपालाल जीरावला बालोतरा
११५.श्रीमती पुष्पादेवी भंवरलाल ओस्तवाल बालोतरा
११६.श्रीमती लीलादेवी नेमीचन्द सालेचा बालोतरा
११७.श्रीमती लूणीदेवी मीठालाल गोलेच्छा बालोतरा
११८.श्रीमती विमलादेवी मोतीलाल बालोतरा
११९.श्रीमती शांतिदेवी देवीचंद चोरड़िया बालोतरा
१२०.श्रीमती कलावती कांतिलाल चोपड़ा बालोतरा
१२१.श्रीमती बदामीदेवी मोहनलाल सिंघवी बालोतरा
१२२.श्रीमती सरस्वतीदेवी जवाहरलाल छाजेड़ बालोतरा
१२३.श्रीमती रतनदेवी कन्हैयालाल सांखला मुम्बई
१२४.श्रीमती पूनम पिंकेश गोखरू मुम्बई
१२५.श्रीमती बसंतीदेवी गेहरीलाल संघवी मुम्बई
१२६.श्रीमती लाडदेवी घेवरचन्द बाफना ठाणा
१२७.श्रीमती पुष्पा भीकमचन्द सिंघवी मुम्बई
१२८.श्री धर्मचन्द नवलराम बड़ाला मुम्बई
१२९.श्रीमती लक्ष्मीदेवी धर्मचन्द बड़ाला मुम्बई
१३०.श्री भैरूलाल शिवलाल डागलिया मुम्बई
१३१.श्रीमती कंचनदेवी भैरूलाल डागलिया मुम्बई
१३२.श्री विपिनचन्द एच.संघवी मुम्बई
१३३.श्रीमती संतोषदेवी भीमराज कच्छारा मुम्बई
१३४.श्रीमती कमलादेवी सोहनलाल लोढ़ा मुम्बई
१३५.श्रीमती राजूदेवी कमलचन्द बैद मुम्बई
१३६.श्री भीकमचन्द बगतावरमल सिंघवी मुम्बई
१३७.श्रीमती मूलीबाई नैनचन्द हिरण बेंगलुरु
१३८.श्रीमती शांतिदेवी भंवरलाल खतंग पचपदरा
१३९.श्रीमती बबितादेवी दिनेशकुमार कोठारी कनाना
१४०.श्रीमती सोहनीदेवी कांतिलाल कोठारी कनाना
१४१.श्रीमती कमलादेवी जसराज श्रीश्रीमाल कनाना
१४२.श्रीमती इन्द्रादेवी महेन्द्रकुमार कोठारी कनाना
१४३.श्रीमती चन्द्रादेवी मोतीलाल सिंघवी असाडा
१४४.श्रीमती गुलाबदेवी मांगीलाल भंसाली असाडा
१४५.श्रीमती गीतादेवी गोरधनलाल कांकरिया पचपदरा
१४६.श्रीमती लीलादेवी जेठमल संकलेचा जसोल
१४७.श्रीमती चंद्रकान्ता संपलालाल चोरड़िया भीलवाड़ा
१४८.श्रीमती ललिता सुरेन्द्रकुमार खाब्या भीलवाड़ा
१४९.श्रीमती विमला रोशनलाल गोखरू भीलवाड़ा
१५०.श्रीमती मंजुबेन मोहनलाल काल्या भीलवाड़ा
१५१.श्रीमती प्रेमदेवी जंवरीमल चोरड़िया भीलवाड़ा
१५२.श्रीमती धरमीदेवी मदनलाल छाजेड़ समदड़ी
१५३.श्रीमती रुक्मिणीदेवी धनराज ढेलड़िया पचपदरा
१५४.श्रीमती लक्ष्मीदेवी सोहनराज तातेड़ जोधपुर
१५५.श्रीमती तुलसीदेवी हनवंतराज मेहता जोधपुर
१५६.श्री जितेन्द्र हनवंतराज मेहता जोधपुर
१५७.श्रीमती अणसीदेवी कपूरचंद तातेड़ जोधपुर
१५८.श्रीमती रोहिणीदेवी उदयचंद तातेड़ जोधपुर
१५९.श्रीमती पानीदेवी नेमीचन्द गोलेच्छा बाड़मेर
१६०.श्रीमती विमला जसकरण कोठारी झकनावदा
१६१.श्रीमती लीलादेवी देवेन्द्रकुमार डोसी हुबली
१६२.श्रीमती मीनादेवी जसकरण सेठिया भीनासर
१६३.श्रीमती मोहनीदेवी छगनलाल बाफना गंगाशहर
१६४.श्रीमती जयश्रीबेन टी.बरमेचा कोलकाता
१६५.श्रीमती विमला शंकरलाल पोरवाल उदयपुर
१६६.श्री शंकरलाल गिरधरलाल भंसाली लाडनूं
१६७.सुश्री उषा जीतमल बांठिया देशनोक
१६८.श्रीमती कौशल्यादेवी जवाहरलाल गोयल भटिंडा
१६९.श्रीमती कमला अरविंदकुमार जैन आमेट
१७०.श्रीमती सज्जनदेवी रतनलाल कुमावत जयपुर
१७१.श्री विनीतकुमार रतनलाल कुमावत जयपुर
१७२.श्रीमती पुष्पादेवी नेमीचन्द बाफना चित्रदुर्ग
१७३.श्री उत्तमचन्द रामचन्द्र गेलड़ा दोंडाइचा
१७४.श्रीमती मनकंवर उत्तमचन्द गेलड़ा दोंडाइचा
१७५.श्रीमती कमलादेवी प्रतापमल बाफना नयापुरा
१७६.श्रीमती गजराबाई राजमल गोगड़ पीपलनेर

१७७.श्रीमती प्रेक्षा रमेशकुमार डोसी बेंगलुरु
१७८.श्रीमती गजराबाई भंवरलाल नाहर बेंगलुरु
१७९.श्रीमती मंजु राजेन्द्रकुमार सेठिया बेंगलुरु
१८०.श्रीमती कान्ताबाई नेमीचंद धारीवाल बेंगलुरु
१८१.श्रीमती केसरदेवी मंगतमल दूगड़ बेंगलुरु
१८२.श्रीमती चन्द्रदेवी दीपचन्द नाहर बेंगलुरु
१८३.श्री अमरचन्द गणपतलाल बोथरा बोरावड़
१८४.श्रीमती केसरबाई हीरालाल गोगड़ पीपलनेर
१८५.श्रीमती कंचनबाई भीकमचन्द गेलड़ा शहादा
१८६.श्रीमती सुशीलादेवी सुन्दरलाल सोनी भूपालपुरा
१८७.श्रीमती अर्चना जितेन्द्रकुमार कोटड़िया झाबुआ
१८८.श्रीमती मंजुदेवी सोहनराज छाजेड़ बाड़मेर
१८९.श्रीमती रेखा गौतमचन्द दूगड़ शारा

संतों में वर्षीतप

१. मुनि जयचन्दलालजी
२. मुनि राजकरणजी
३. मुनि कमलकुमारजी
४. मुनि पूर्णानन्दजी
५. मुनि मोहविजयजी
६. मुनि अजितकुमारजी
७. मुनि राजकुमारजी
८. मुनि विकासकुमारजी
९. मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी

साध्वियों में वर्षीतप

१. साध्वी शीलवतीजी
२. साध्वी मृदुलाकुमारीजी
३. साध्वी इलाकुमारीजी (तीन वर्षों से तेले-तेले)
४. साध्वी सुमनकुमारीजी
५. साध्वी मुक्तिप्रभाजी
६. साध्वी मधुस्मिताजी
७. साध्वी अमितरेखाजी

समणश्रेणी मे वर्षीतप

१. समणी शीलप्रज्ञाजी
२. समणी हिमप्रज्ञाजी
३. समणी प्रांजलप्रज्ञाजी

आगम मंथन प्रतियोगिता-७ के परिणाम घोषित

तेरापंथ के नवमाचार्य आचार्य तुलसी के ९९वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जैविभा द्वारा 'सूयगडो' आगम ग्रंथ पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता-७ का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के प्रथम चरण में संभागी ११९५ प्रतियोगियों में से वरीयता क्रमानुसार सौ प्रतियोगियों हेतु द्वितीय चरण के अंतर्गत जैन विश्वभारती, लाडनूं में समायोजित लिखित परीक्षा में ३६ प्रतियोगी संभागी बने।

प्रथम चरण का परीक्षा परिणाम www.jvbharti.org एवं www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध है। इस संदर्भ में अधिक जानकारी हेतु मोबाइल नं. ०७७३७३६८८६८ पर संपर्क किया जा सकता है।

उपासक प्रशिक्षण शिविर : एक सूचना

परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आगामी २७ जुलाई से ५ अगस्त तक लाडनूं में उपासक प्रशिक्षण शिविर की समायोजना की जा रही है। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- २७ जुलाई को मध्याह्न में आयोजित प्रवेश परीक्षा में चयनित नवागंतुक व्यक्ति ही शिविर में संभागी बन सकेंगे। प्रशिक्षण के पश्चात् ४ अगस्त को परीक्षा आयोजित होगी।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 25-05-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- 'प्रवक्ता उपासक' बनने के इच्छुक सहयोगी उपासकों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार परीक्षा का आयोजन ४ अगस्त को होगा। प्रशिक्षण शिविर में उनकी उपस्थिति स्वैच्छिक है।
- ४-६ अगस्त २०१३ तक प्रवक्ता उपासकों के लिए त्रिदिवसीय कार्यशाला समायोज्य है। पूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के अवसर पर 'तुलसी दर्शन कार्यशाला के रूप में इसकी समायोजना की गई है। कार्यशाला में सहयोगी उपासकों की उपस्थिति स्वैच्छिक है।

प्रवेश परीक्षा का पाठ्यक्रम, शिविर प्रवेश की अर्हताएं तथा अन्य जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा से मो.नं.०९३२७०७१३७६ एवं सहसंयोजक श्री महावीरप्रताप दूगड़ से मो.नं. ०९३३१०१९४५५ पर संपर्क किया जा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्रीमती गजराबाई भंवरलालजी नाहर, श्रीमती चन्दादेवी युवा गौरव दीपचन्दजी नाहर एवं श्रीमती प्रेक्षा रमेश डोसी के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में दिलीप, प्रमोद-प्रीति, रंजीता-राहुल, साक्षी नाहर परिवार, जाणुन्दा-बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री भेरूलाल-कंचनदेवी डागलिया (चारभुजा-मुम्बई) के दाम्पत्य जीवन की ४६वीं वर्षगांठ व छठे वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू विनोद-कान्ता, नवीन-सुनीता, सुपौत्र विदित, वंश, शुभंकर व सुपौत्री विधि डागलिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती कान्ताबेन सिरेमलजी दोशी (मंडार-धुलिया-मुम्बई) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू संदीप-प्रतीक्षा, सुधीर-निशा, समीर-राजश्री, सुपौत्र विशेष, सुपौत्री आस्था, हीया, दीया दोशी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती मालीदेवी बोथरा (धर्मपत्नी-स्व.लाभूरामजी बोथरा,श्रीडूंगरगढ़-सूरत) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू चंपालाल-मौसमीदेवी, किरणदेवी पानमल, गुलाबचन्द-सुन्दरदेवी, मिर्जामल-सायरदेवी, पृथ्वीराज-झणकारदेवी व सुपौत्रों द्वारा प्रदत्त।

शासनश्री स्व. मुनि राजेन्द्रकुमारजी 'शासन गौरव' संबोधन से संबोधित

२० मई को धानेरा में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने शासनश्री स्व. मुनि राजेन्द्रकुमारजी को 'शासन गौरव' संबोधन से संबोधित किया है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री मर्यादाकुमार कोठारी, 'ज्ञानम्' फर्स्ट फ्लोर, मंगल टावर, बिश्नोई धर्मशाला के सामने, रातानाडा, जोधपुर- ३४२००१ (राज.)
मोबाइल नं. ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**